प्राक्कथन

प्राक्कथन

❑ प्रेरणा एवं विषय चयन -

प्रारंभ से ही मेरी काव्य विधा में काव्य में अधिक रुचि रही है। काव्य बहुत प्राचीन विधा है। अधिकतर प्राचीन वाङ्मय काव्य में ही लिखा गया है। जो आज के वर्तमान जीवन के लिए बहुत उपयोगी है। अन्य साहित्य विधाओं की तुलना में काव्य मनुष्य के मन पर जल्द-ही असर छोड़ता है। काव्य में मनुष्य के पूरे जीवन को बदलने की शक्ति होती है। एक श्रेष्ठ काव्य मनुष्य को नेक राह पर ले जा सकता है। मेरे जीवन में भी काव्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। मैं एक सामान्य परिवार का छात्र हूँ। मेरे जीवन में मुझे भी बहुत उतार-चढ़ाव देखने पड़े। कभी-कभी तो इस जीवन से ही मेरा मन उब जाता था। ऐसे हताश समय में मेरे मन में आशा की लौ जगाने का कार्य काव्य ने किया है। मैं जैसे ही विद्वानों के जीवन यात्रा को पढ़ता गया और उनके साहित्य के संपर्क में आता रहा वैसे ही मेरा जीवन के प्रति देखने का दृष्टिकोण बदलता गया। जब इन लोगों की महानता का रहस्य जानने का प्रयास किया तब मालूम हुआ कि इन महान विद्वानों की महानता के पीछे बहुत बड़ा त्याग है। सामान्य-से-सामान्य आदमी भी अपने कर्तृत्व के बल पर महानता के शिखर पर पहुँच सकता है। यही विचार मेरे जीवन के लिए प्रेरणादायी सिद्ध हुआ। उसी वक्त से मैंने परिस्थिति से जूझना सीख लिया, वह – कविता के कारण ही।

जब एम्.फिल. के लिए लघु शोध-प्रबंध संबंधी विषय-चयन का सिलसिला शुरू हुआ तब मैं शोध-निर्देशक श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर जी से मिला। मेरी रुचि को देखकर उन्होंने मुझे आधुनिक कवियों को पढ़ने का सुझाव दिया। इस दृष्टि से मैंने कई आधुनिक कवियों का साहित्य पढ़ा। इन सभी रचनाकारों का साहित्य मुझे प्रभावित करता रहा। इसमें से रामदरश मिश्र जी की 'बाजार को निकले हैं लोग' तथा 'रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ' इन दो काव्य रचनाओं ने मुझे विशेष प्रभावित किया। जब मैंने इस रचनाओं तथा रचनाकार के जीवन के तह तक पहुँचने का प्रयास किया तब मुझे यह माहौल परिचित-सा जान पड़ा। मैं खुद देहाती तथा शहरी आदमी की समस्याओं से मैं अच्छी तरह से परिचित हूँ क्योंकि मैंने खुद देहात के मजदूरों तथा कल-कारखानों में काम करनेवाले लोगों के साथ काम किया है। कहना आवश्यक नहीं है कि

साहित्य में चित्रित पीड़ाओं से भी कई गुना ज्यादा पीड़ाएँ इन आम आदमियों को सहनी पड़ती है। जीवन में कितने भी संकट क्यों न आये लेकिन उससे भागने की नहीं तो उससे जूझने की प्रेरणा मिश्र जी के काव्य से मिलती है। इसी वजह से मैंने रामदरश मिश्र जी के काव्य पर ही अनुसंधान करने का निश्चय किया। गहन अध्ययन के पश्चात् मेरे श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर जी तथा श्रद्धेय गुरुवर्य अर्जुन चव्हाण जी के साथ शोध-विषय संबंधी विचार-विमर्श किया। अत: उनके पूछे गये प्रश्नों के समाधानकारक उत्तर मिलने के पश्चात् ही उन्होंने अपनी संतृप्ति प्रकट की। गहरे विचार-विमर्श के पश्चात् लघु शोध प्रबंध के लिए ''रामदरश मिश्र के काव्य में प्रतिबिंबित युगीन जीवन'' ('रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ' तथा 'बाजार को निकले हैं लोग' के विशेष संदर्भ में) नामक विषय का चयन हुआ।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए थे -

1. रामदरश मिश्र जी का व्यक्तित्व तथा कृतित्व कैसा रहा होगा?
2. रामदरश मिश्र जी के काव्य के केंद्रिय विषय कौन-कौन से रहे होंगे?
3. रामदरश मिश्र के काव्य पर तत्कालीन परिवेश का कहाँ तक प्रभाव रहा है?
4. रामदरश मिश्र जी के काव्य में युगीन जीवन किस प्रकार उभरकर आया है?
5. रामदरश मिश्र जी के काव्य में वर्तमानकालीन किन-किन समस्याओं का चित्रण हुआ है? क्या कवि ने अपनी कविताओं में समाधान देने का प्रयास किया है?
6. रामदरश मिश्र जी का काव्य कलात्मक दृष्टि से कहाँ तक सफल है?
7. रामदरश मिश्र जी के काव्य का मूल उद्देश्य क्या है?

विवेच्य काव्य के अध्ययन के पश्चात् उक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए। उन्हें उपसंहार में प्रस्तुत किया है। अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के विषय को मैंने निम्न अध्यायों में विभाजित कर उसका विवेचन-विश्लेषण किया है।

❑ **प्रथम अध्याय - ''रामदरश मिश्र : व्यक्ति और वाङ्मय''**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत रामदरश मिश्र जी का संक्षिप्त व्यक्ति परिचय तथा वाङ्मयीन परिचय दिया है। व्यक्ति परिचय के अंतर्गत उनका जन्म, बाल्यकाल, शिक्षा, माता-पिता, भाई-बहन, विवाह, गुरु, अध्यापन तथा व्यक्तित्व आदि का संक्षिप्त परिचय दिया है। वाङ्मयीन परिचय के अंतर्गत उन्होंने किये साहित्य की विविध विधाओं के लेखन संबंधी संक्षिप्त परिचय दिया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किये हैं।

❑ **द्वितीय अध्याय - ''रामदरश मिश्र के काव्य का परिचयात्मक विवेचन''**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने शोध विषय संबंधी विवेच्य दोनों काव्य-संग्रहों के सभी कविताओं तथा ग़ज़लों का संक्षिप्त परिचय दिया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

❑ **तृतीय अध्याय - ''रामदरश मिश्र के का काव्य में युगीन जीवन''**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने युगीन जीवन से तात्पर्य, युगीन जीवन के विविध पक्ष, रामदरश मिश्र के काव्य में चित्रित युगीन जीवन आदि बातों का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

❑ **चतुर्थ अध्याय - ''विवेच्य काव्य में युगजीवन की समस्याएँ एवं समाधान''**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने विवेच्य काव्य में चित्रित समस्याएँ एवं समाधान का विवेचन विश्लेषण किया है। 'विवेच्य काव्य में चित्रित समस्याएँ' इस मुद्दे के अंतर्गत भ्रष्टाचार की समस्या, शोषण की समस्या, भय की समस्या, बेरोजगारी तथा गरीबी की समस्या, बढ़ती जनसंख्या की समस्या, व्यसनाधीनता की समस्या, असंघटितता तथा दिशाहीनता की समस्या, सुख के खोज की समस्या, रिश्तों में दरार की समस्या, लापरवाही की समस्या, कृत्रिम जीवन तथा घुटन की समस्या, राजनीतिक समस्या, साहित्यिक क्षेत्र की समस्याएँ, न्याय और आम आदमी की समस्याएँ, धार्मिक समस्या, किसान जीवन की समस्याएँ, पर्यावरण की समस्या, प्रेमी युगलों की समस्या आदि समस्याओं का विवेचन-विश्लेषण किया है। इसके बाद कई समस्याओं का समाधान देने का प्रयास किया है। इसका विवेचन-विश्लेषण इस अध्याय के अंतर्गत किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किये हैं।

❑ **पंचम अध्याय - ''विवेच्य काव्य का कलात्मक अनुशीलन''**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने रामदरश मिश्र के ग़ज़लों के विविध अंग, मिश्र जी के काव्य की भाषा, रस, अलंकार, प्रतीक योजना, बिंब योजना आदि बातों का विवेचन-विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

अंत में 'उपसंहार' के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्ण विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष को दिया गया है। इसके उपरांत परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है।

❑ प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के अंतर्गत मिश्र जी के विवेच्य दोनों काव्य-संग्रहों पर पहली बार स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हुआ है।
2. मिश्र जी की काव्य-प्रेरणा का अध्ययन किया गया है।
3. मिश्र जी के विवेच्य दोनों काव्य-संग्रहों का कविताओं तथा ग़ज़लों का परिचय यहाँ प्रस्तुत है।
4. इसमें स्वातंत्र्योत्तर युगीन जीवन तथा समस्याओं का स्वतंत्र रूप से विवेचन-विश्लेषण किया गया है।
5. इस लघु शोध-प्रबंध के अंतर्गत मिश्र जी के काव्य का कलात्मक विवेचन प्रस्तुत है।

❑❑❑❑

कृतज्ञता

व्यक्ति और समाज का संबंध जल और मछली की तरह है। जिस प्रकार जल के बीना मछली नहीं रह सकती उसी प्रकार समाज के बीना आदमी। हर एक आदमी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में समाज का ऋणी होता है। इसे मैं भी अपवाद नहीं हूँ। इसलिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की आपूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में सहायता करनेवाले गुरुजनों, परिवारजनों, हितचिंतकों एवं आत्मीयजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा आद्य कर्तव्य है।

यह लघु शोध-प्रबंध मेरे श्रद्धेय गुरुवर्य **डॉ.प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर जी** के अमूल्य निर्देशन का फल है। आपका आत्मीय सहयोग, निरंतर प्रेरणा तथा अमूल्य निर्देशन के कारण ही यह जटिलतम कार्य सुचारू रूप से संपन्न हुआ। आपके मौलिक विचार सिर्फ लघु शोध-प्रबंध के लिए ही नहीं तो मेरे जीवन के लिए भी उपयोगी सिद्ध हुए हैं। अत: आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर मैं आपके ऋण से मुक्त नहीं होना चाहता, बल्कि हमेशा आपके ऋण में ही रहना पसंद करूँगा। आपकी धर्मपत्नी **शकुंतला जी**, बेटा **पंकज**, बेटी **शीतल** उनके स्नेह तथा आत्मीयता को भूलना मेरे लिए असंभव है। अत: उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा कर्तव्य समझता हूँ।

साहित्यिक अनुसंधान क्षेत्र में किसी भी रचना के तह तक पहुँचने के लिए लेखकीय सहयोग महत्त्वपूर्ण रहता है। इस दृष्टि से मुझे समय-समय पर **रचनाकार रामदरश मिश्र जी** का महत्त्वपूर्ण आत्मीय सहयोग मिलता रहा है। अत: मैं उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा कर्तव्य समझता हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष श्रद्धेय गुरुवर्य **डॉ. अर्जुन चव्हाण जी**, आपका स्नेह तथा अनमोल विचार मुझे सदाही प्रभावित करते रहे हैं। आपका इस अनुसंधान कार्य में महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। भविष्य में भी ऐसा ही स्नेह तथा सहयोग मिलता रहे यही आपसे कामना करता हूँ। अत: आपके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। साथ-ही-साथ इसी विभाग में कार्यरत **प्राध्यापिका** तथा **प्राध्यापकेत्तर कर्मचारियों** का भी मेरे अनुसंधान में महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। अत: उनके प्रति भी तहे दिल से मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

चाहे दुनिया के किसी भी विश्वविद्यालय की डिग्री हासील करें लेकिन गुरु और माता-पिता से कोई भी बच्चा बड़ा नहीं हो सकता। अत: पहली कक्षा से लेकर एम्.फिल. तक मेरी शिक्षा में जिन शिक्षा **गुरुओं** का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है उनके प्रति

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। साथ ही साथ कर्म को ही देवता माननेवाली मेरी **माता अंजना जी** तथा **पिता विठ्ठल जी** उनके ऋण से मुक्त होना मेरे लिए नामुमकिन है। आपने जीवन में कड़ी मेहनत से हम छ: भाईयों को बूरी राह से बचाया तथा एक अच्छे जीवन का रास्ता दिखाया। अत: आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित न कर आपके ऋण में ही रहना पसंद करूँगा। मेरे **बड़े भाई दिनकर** तथा **छोटे भाई हरी, गणेश, मारूती, बाळासाहेब** आपके प्रति मैं ऋणी हूँ क्योंकि आपकी वजह से ही घर की चिंता से मुक्त रहकर अनुसंधान कर सका। साथ ही साथ मेरे **अन्य भाई सदाशिव, सुभाष, सुखदेव** तथा **अन्य सभी भाइयों** का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। अत: उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मेरी दृष्टि से आदमी परिस्थिति से छोटा हो या बड़ा, जिसका मन बड़ा होता है वही आदमी दुनिया में सबसे बड़ा होता है। अत: जिन **दिलदार लोगों** ने मेरे प्रति अपने मन का बड़प्पन दिखाया उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा कर्तव्य समझता हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ज्ञानरूपी सागर में मुझ पर अपेक्षा से भी ज्यादा प्यार करनेवाले मेरे सिनिअर, ज्युनिअर तथा अलग-अलग क्षेत्र में करिअर करनेवाले **सभी दोस्त** तथा मेरे एम्.फिल. कक्षा के **सभी साथी** और **सहेलियों** का भी मेरे अनुसंधान कार्य में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। अत: उनके भविष्य के प्रति शुभकामनाएँ प्रकट कर उनके प्रति भी शुक्रिया अदा करता हूँ।

विद्यार्थी जीवन का आत्मा ग्रंथ, ऐसे अनमोल ग्रंथों का जतन करनेवाले 'बैरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय' के **ग्रंथपाल** तथा **सभी कर्मचारियों** का भी प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के सामग्री संकलन में महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। अत: उनके प्रति भी तहे दिल से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का तत्परता से आकर्षक रूप में टंकण करनेवाले **अक्षर टायपिंग** के संचालक **श्री. गिरीधर सावंत** तथा **श्रीमती पल्लवी सावंत** इनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। अत: फिर एक बार इस लघु शोध-प्रबंध के जिए जिन **ज्ञात, अज्ञात महानुभावों** की शुभकामनाएँ प्राप्त हुई उन सबके प्रति आत्मीयतापूर्ण भाव से कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से **विद्वानों** के सम्मुख परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

स्थान - कोल्हापुर

तिथि - 27 DEC 2007

(**श्री. अनिल विठ्ठल मकर**)